नकदी में बढ़त

देश में फिलहाल 20.65 लाख करोड़ रुपये की मुद्रा चलन में है, जो नोटबंदी से पहले के 17.97 लाख करोड़ रुपये से भी अधिक है. एचएसबीसी की शोध रिपोर्ट में इन आंकड़ों का विश्लेषण करते हुए कहा गया है कि अर्थव्यवस्था में 'अनौपचारिक' लेन-देन में बढ़ोतरी हो रही है. भारत में इस बैंक की मुख्य अर्थशास्त्री प्रांजुल भंडारी का मानना है कि सरकार सेवा एवं वस्तु कर प्रणाली (जीएसटी) को लागू करने में नरमी बरत रही है, जिसकी वजह से नकद कारोबार बढ़ा है. उन्होंने यह भी रेखांकित किया है कि इस प्रणाली से अधिक व्यवसायों द्वारा कर भुगतान करने की अपेक्षा पूरी होने में देरी हो रही है. यह भी ध्यान में रखा जाना चाहिए कि सकल घरेलू उत्पादन (जीडीपी) के अनुपात में नकदी की बढ़त पहले से बहुत अधिक नहीं है. नोटबंदी से पहले यह आंकड़ा 11.9 फीसदी था, जो मार्च, 2017 में घटकर 8.8 फीसदी हो गया था. पिछले साल मार्च में यह अनुपात 10.9 फीसदी हुआ और चालू वित्त वर्ष के अंत में इसके 11.4 फीसदी रहने का अनुमान है. विकसित अर्थव्यवस्थाओं में भी जीडीपी और चलन में नगदी का अनुपात कमोबेश इसी स्तर पर है. इन तथ्यों की रोशनी में बाजार में अधिक नगदी चिंता की बात नहीं है, लेकिन जीएसटी तंत्र के ढीलेपन और नगद भुगतान ज्यादा होने तथा इस बढ़त के बीच के संबंध पर गंभीरता से विचार की जरूरत है. रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर रघुराम राजन समेत अनेक जानकारों की मान्यता रही है कि चुनाव से पहले नकदी की मात्रा बढ़ने की परिपाटी रही है. ग्रामीण भारत में मांग बढ़ने से भी नकदी अधिक होती रही है. एचएसबीसी की रिपोर्ट चुनाव के कारक को बहुत असरदार नहीं मानती है. ग्रामीण क्षेत्रों में आमदनी कम होने तथा कृषि संकट के कारण खरीद-बिक्री की प्रक्रिया मंद है. एक महत्वपूर्ण रूझान यह भी है कि बहुत कम नकदी वापस बैंकों में आ रही है. इस कारण मौजूदा वित्त वर्ष में आर्थिक वृद्धि के बावजूद जमा रकम में बढ़ोतरी की दर 4.9 फीसदी (18 जनवरी तक) है, जो कर्ज लेने की वृद्धि दर 8.2 फीसदी से बहुत कम है. कुछ समय पहले रिजर्व बैंक के एक अध्ययन में बताया गया था कि लोग सामान्य लेन-देन के लिए घरों में नकदी रखना पसंद करते हैं. ऐसे में इलेक्ट्रॉनिक और डिजिटल साधनों से भुगतान पर जोर देकर नकदी के इस्तेमाल को कम करने की कोशिशों को तेज किया जाना चाहिए. इन साधनों को सुरक्षित और सस्ता बनाया जाना चाहिए. छोटे और मध्यम स्तर के उद्यम अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण अंग हैं. यदि बैंकों से उन्हें कर्ज लेने और भुगतान करने की बेहतर सुविधाएं मुहैया करायी जायें, तो इससे भी नकदी के चलन को नियंत्रित करने में मदद मिलेगी. ये उद्यम अनौपचारिक कर्जदाताओं और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों से पैसा उठाते हैं. चुनाव सुधारों तथा भ्रष्टाचार पर रोक लगाने के प्रयास भी बहुत जरूरी हैं. उम्मीद है कि लगातार कोशिशों से अर्थव्यवस्था के बही-खाते को दुरुस्त कर नकदी की बढ़त पर अंकुश लगाया जा सकेगा.

यदि बैंकों से उन्हें कर्ज लेने और भुगतान करने की बेहतर सुविधाएं मुहैया करायी जायें, तो इससे भी नकदी के चलन को नियंत्रित करने में मदद मिलेगी.

ट्विटर बाबा की बादशाहत

तरुण विजय
पूर्व राज्यसभा सांसद
tarunvijay55555@gmail.com

एनआईसी में जितना निवेश होना चाहिए उतना क्यों नहीं करते, ताकि राष्ट्रीय सुरक्षा की यह चौथी भुजा मजबूत बने और सामान्य नागरिक जीमेल और याहू की बजाय एनआईसी इस्तेमाल करने के लिए उत्साहित हो?

हमारी एक खासियत है. कोई भी बाहर का हो, अंग्रेजी बोलता हो और अगर वह सोशल मीडिया के एक हिस्से का मालिक है, तो फिर बात ही क्या? हमारे देश में आ जाये, तो हम इस तरह से उसकी आवभगत करते हैं, मानो वह किसी सर्वप्रभुता संपन्न देश का मालिक हो. तनिक हमारी हल्की-फुल्की तारीफ कर दी, तो बस हम यूं खुश होते हैं, मानो उस सर्टिफिकेट के लिए बरसों से हम तरस रहे थे. ट्विटर, फेसबुक, जीमेल का ऐसा ही मामला है. इन दिनों ट्विटर से झगड़ा चल रहा है. ट्विटर के भारतीय समन्वयक भारतीय बाबू ही हैं. जहां से वेतन मिलता है, उसके प्रति निष्ठा रखते हैं. उनकी भारतीयता का हमारी संवेदनाओं, धार्मिकता अथवा सामाजिक चादर से उतना ही लेना-देना हो सकता है, जितना ट्विटर के केंद्रीय कार्यालय सैनफ्रांसिस्को में बैठे कंपनी मालिकों का हो सकता है. उनका हमसे उतना ही लेना-देना हो सकता है, जितना जनजातियों के बीच काम कर रहे किसी दिकू या जिसे सम्मानपूर्वक व्यापारी कहते हैं, उसका हो सकता है. उसे पैसा कमाना है और अपने देश के कानून के अंतर्गत हम सबकी सूचना-संपदा अमेरिका में जमा करनी है. हम भले, सज्जन, सभ्य, सब पर विश्वास करनेवाले और सदियों से सबसे विश्वासघात सहनेवाले थोड़ा-बहुत शोर मचायेंगे ही. डीपी वगैरह बदलकर ऐसे विरोध प्रकट करेंगे, मानो जंतर-मंतर पर खड़े हों.

ट्विटर के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) जैक डोरसी ने संसदीय समिति के पहले बुलावे को तो टाल दिया और असभ्यतापूर्वक उनकी कंपनी के भारतीय संचालकों ने एक भारतीय महिला कर्मचारी को भेजा, जिन्हें विशेष आराम और चिकित्सकीय संरक्षण की आवश्यकता थी. हम समझते हैं ट्विटर वाले भले लोग हैं, लेकिन उन्होंने उन भारतीय महिला को समिति के सामने भेजा जाना भी खबर में तब्दील कर संसदीय समिति पर ही दोषारोपण करने की कोशिश की, मानो इसका इल्जाम भी समिति पर हो. बहरहाल देखते हैं कि जैक डोरसी संसदीय समिति के द्वारा दी गयी अंतिम तिथि पर आते हैं या नहीं. और अगर आ भी गये, तो अपने व्यवहार या ट्विटर के भारतीय चलन में कोई परिवर्तन करेंगे, इसकी कोई गुंजाइश किसी को दिखती नहीं है, बल्कि यह हमारे वामपंथी एवं भाजपा-विरोधी सेकुलरों के हाथ में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के हनन का एक और ऐसा उदाहरण बनेगा, जिसे अमेरिकी अखबार और उनमें लिखनेवाले भारतीय स्तंभकार मसाले के साथ इस्तेमाल करेंगे.

अगर ईस्ट इंडिया कंपनी हमारे लिए इसलिए खराब थी कि वह भारत की संपदा को लूटकर ब्रिटेन ले जा रही थी या कोलंबस मूल अमेरिकी इंडियनों के लिए इसलिए खराब थे, क्योंकि उसके कारण वहां के मूल निवासियों का सोना, आस्था एवं जमीन लूटी गयी तथा चार करोड़ से अधिक अमेरिकी इंडियन मार डाले गये, तो किस कसौटी पर हमें ट्विटर, फेसबुक और गूगल इतने प्रिय लगते हैं कि न केवल हम उनके द्वारा प्रत्येक भारतीय की सूचना-संपदा लूटे जाने पर खामोश हैं, बल्कि उन्हें बाहें फैलाकर अतिरिक्त सुविधाएं देकर रेलवे स्टेशनों से लेकर हवाई अड्डों और आम बाजारों तक सूचना एकत्र करने का काम सौंपते हैं, मानो हम बेबस हों. भारतीय सूचना प्रद्योगिकी एवं इंटरनेट से जुड़े कानून इतने कमजोर और अभी तक अनेक प्रावधानों के असंशोधित रूप में स्थापित हैं कि जिनके अंतर्गत ट्विटर, फेसबुक, गूगल द्वारा भारत की सूचना-संपदा की लूट एवं प्रत्येक भारतीय के व्यवहार, स्वभाव, वित्तीय आचरण, पसंद-नापसंद की समस्त जानकारी अमेरिका में एकत्र करने का हम ना विरोध कर सकते हैं, ना ऐसा करने की इच्छा रखते हैं.

संभवतः हम भारत के महान और विश्वविख्यात सूचना प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों को अमेरिकी कुली बनते देख खुश होते हैं. हम उनसे यह पूछने की कोशिश नहीं करते कि भाई आप पढ़े तो अपने आंध्र, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश के स्कूलों में ही हो. भारत की जनता ने अपने धन और मन से आपको बड़ा बनाया. आपको अमेरिका में करोड़ों रुपये महीने की तनख्वाह मिलने लगी. गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, फेसबुक, ट्विटर जैसे बड़े नामधारी कॉरपोरेशनों में बड़े कारोबार और संचालक जब भारतीय बन जाते हैं, तो हम भारत में बैंड बाजा बारात लेकर उनकी तारीफ करते हैं और उन्हें पुरस्कारों से लाद देते हैं. लेकिन, वे अमेरिकी माता और ब्रिटिश माता की सेवा करते हैं. भारत माता की संतानें लुधियाना से बेगूसराय तक खुशी मनाती हैं. क्यों? भाई अगर वे भारत के ग्रामीण नौजवानों के लिए भारतीय भाषाओं में आगे बढ़ने का संस्थान खोलने भारत आयें और अपनी योग्यता से, अपनी अपार निधि से भारत माता के बच्चों को अपने जैसा ही नहीं, अपने से बेहतर बनाने के लिए कोशिश करें, तो बात कुछ समझ में आती है. सुंदर पिचाई और सत्या नडेला बड़े नाम हैं. ऐसे पचासों बड़े नाम हम ढूंढ सकते हैं. क्या वे भारत में भारतीयों के लिए कोई सोशल मीडिया मंच नहीं बना सकते, जिसके माध्यम से एकत्र की जानेवाली समस्त सूचना-संपदा भारत में ही रहे?

साल 2014 में मैंने राज्यसभा में मांग उठायी थी कि जीमेल, याहू तथा ट्विटर जैसे अमेरिकी सोशल मीडिया मंचों पर जानेवाली भारतीय सूचनाएं अमेरिकी कानून के अंतर्गत वहां के रक्षा सलाहकार के पास जाती ही हैं और उनका राजनीतिक, आर्थिक एवं रणनीतिक उपयोग हम रोक नहीं पाते. इसलिए आवश्यक है कि भारत अपने सामाजिक व्यवहार के मंच एवं संवाद की इलेक्ट्रॉनिक डाक स्थापित करे. करोड़ों, अरबों रुपये हम आईटी विभागों और मंत्रालयों पर खर्च करते हैं. भारत का एक केंद्रीय और सूचना प्रौद्योगिकी एवं साइबर सचिव भी है. क्यों नहीं भुवन को गूगल अर्थ की तरह समर्थ बना सकते? एनआईसी में जितना निवेश होना चाहिए उतना क्यों नहीं करते, ताकि राष्ट्रीय सुरक्षा की यह चौथी भुजा मजबूत बने और सामान्य नागरिक जीमेल और याहू की बजाय एनआईसी इस्तेमाल करने के लिए उत्साहित हो?

सांसदों को एनआईसी की ईमेल सुविधा दी जाती है, पर क्या कारण है कि अधिकारियों और सांसदों में शायद ही कोई इसका इस्तेमाल करना चाहता हो? अपने उपकरण मजबूत नहीं करेंगे, विदेशी कंपनियों को भारतीय सूचना-संपदा एकत्र करने की पूरी सुविधा देंगे और उसके बाद शिकायत करेंगे कि ये लोग बेईमानी कर रहे हैं और हमारी सुनते नहीं. विदेशी कंपनियां सूचना क्षेत्र में ईस्ट इंडिया कंपनी ही हैं. लेकिन, हम भोले-भाले भारतीय इतिहास दोहराना बहुत पसंद करते हैं.

बोधि वृक्ष

प्रेम के द्वार

मनुष्य की भाषा में प्रेम से ज्यादा बहुमूल्य और कोई शब्द नहीं. बहुत कम सौभाग्यशाली लोग हैं, जो प्रेम से परिचित हो पाते हैं. क्योंकि प्रेम की पहली शर्त ही आदमी पूरी नहीं कर पाता. पहली शर्त यह है कि जो आदमी अपने अहंकार को मिटाने को राजी है, वही केवल प्रेम को उपलब्ध हो सकता है. यह कठिन शर्त है. हम अपने अहंकार को ही भरने के लिए जीवनभर लगे रहते हैं. धन से, यश से, पद से, ज्ञान से, और यहां तक कि त्याग से भी हम अहंकार को ही भरने की कोशिश करते हैं. जीवन की सारी दिशाओं से हम सिर्फ अपने 'मैं' को मजबूत करते हैं. और मैं से बड़ा कोई झूठ नहीं है. मैं एकदम असत्य बात है. लहर का कोई अस्तित्व नहीं है, अस्तित्व तो सागर का है. पत्ते का कोई अस्तित्व नहीं है, अस्तित्व तो वृक्ष का है. और वृक्ष का भी कोई अस्तित्व नहीं है, अस्तित्व तो पृथ्वी का है. पृथ्वी का भी क्या अस्तित्व है चांद-तारों और सूरज के बिना? असल में अस्तित्व समग्र का है. अस्तित्व खंड-खंड का नहीं. इसलिए मैं के असत्य होने के कारण सारा जीवन ही असत्य हो जाता है. ध्यान रहे, जहां मैं मजबूत है, वहां प्रेम असंभव है. क्योंकि प्रेम का मतलब है कि मैं नहीं हूं, तू है. जलालुद्दीन रूमी ने एक छोटा सा गीत लिखा है- एक प्रेमी अपनी प्रेयसी के द्वार पर गया है, उसने द्वार खटखटाया. पीछे से पूछा गया, कौन है? उस प्रेमी ने कहा: मैं हूं, तेरा प्रेमी. लेकिन भीतर सन्नाटा हो गया. प्रेमी जोर से दरवाजा पीटने लगा और कहने लगा, द्वार खोल? मैं हूं तेरा प्रेमी. फिर कोई उत्तर नहीं. बहुत देर द्वार पीटने पर उत्तर आया कि जब तक मैं हूं, तब तक तू प्रेमी कैसे हो सकेगा? ये दोनों बातें एक साथ कैसे हो सकती हैं? अभी तू लौट जा, अभी प्रेम के द्वार खुले, इस योग्य तू नहीं हुआ. जब मैं मिट जाये, तो आ जाना. जब प्रेमी होता है, तो मैं मिट जाता है. जब मैं होता है, तो प्रेम पैदा ही नहीं हो पाता है. प्रेमी लौट गया. बहुत वर्ष बीते वापस आया. फिर उसने द्वार खटखटाये, पीछे से फिर वही सवाल- कौन है! और वह कहता है- तू ही है. द्वार तुरंत खुल गये.

आचार्य रजनीश ओशो

प्यार का उत्कृष्ट संस्करण

श्रीप्रकाश शर्मा
प्राचार्य, जवाहर नवोदय विद्यालय, मामित
spsharma.rishu@gmail.com

आज आवश्यक यह है कि तन के आकर्षण में तथा प्यार की अभिव्यक्ति में मन के भटकाव को रोका जाये और प्यार के उत्कृष्ट संस्करण की तलाश की जाये, जहां तन से तन के मिलन की बजाय मन से मन के मिलन के जादू से पूरी कायनात सराबोर हो जाये.

चीन की एक बहुत पुरानी लोक गाथा है. कहते हैं कि किसी समय वहां संयोग से तीन नेत्रहीन दोस्तों की मुलाकात हुई. उन दोस्तों में आपस में बातें होते-होते यह चर्चा चल पड़ी कि इस धरती पर हाथी बड़ा ही विचित्र जीव होता है. किंतु तत्क्षण ही वे तीनों यह सोचकर उदास हो गये कि दुर्भाग्यवश नेत्रहीनता के कारण वे सभी मित्र हाथी को देख नहीं सकते हैं. कहा जाता है कि ठीक उसी समय उस रास्ते से एक व्यापारी अपने हाथियों के झुंड के साथ गुजर रहा था. इन तीनों नेत्रहीन दोस्तों की बातों को उस व्यापारी ने सुन लिया और उसने कहा, 'तुम लोग नाहक परेशान हो रहे हो. तुम्हें आंखें ना हुईं तो क्या हुआ, मैं तुम्हें हाथी को देखने में मदद करूंगा, फिर तुम लोग खुद जान जाओगे कि हाथी कैसा जानवर होता है.'

तीनों नेत्रहीन व्यापारी के साथ चल पड़े. हाथी के ठहरने की जगह पर वे सभी रुक गये. सभी ने बारी-बारी से हाथी के विभिन्न अंगों को स्पर्श किया. पहले ने हाथी के दोनों पावों को स्पर्श किया तथा अपने मित्रों से कहा है कि हाथी तो बिना शाखाओं वाला पेड़ सरीखा है. दूसरे ने सूंड को थाम लिया और उसे सांप समझने की गलती कर बैठा. तीसरे ने कान छुआ और हाथ से हवा करनेवाला पंखा समझ बैठा. तीन मित्र, हाथी एक और निष्कर्ष तीन, पर तीनों निष्कर्ष हकीकत से कोसों दूर.

सच पूछिये तो 'प्यार' के बारे में व्याप्त गलतफहमी इस कहानी की दुविधा से कम विचित्र नहीं है. भाव एक, उद्गार एक, लहर एक, तरंग एक, संवेदना एक और प्यार करनेवाले लोग अलग-अलग. और उनके प्यार के प्रति दृष्टिकोण भी बिलकुल भिन्न-भिन्न.

क्या आपने कभी किसी गूंगे से पूछा है कि गुड़ का स्वाद कैसा होता है? वह बेचारा गूंगा कभी भी गुड़ के मिठास को शब्दों में अभिव्यक्त नहीं कर पाता है. गुड़ के मिठास के एहसास को महज उसकी आंखों में ही पढ़ा जा सकता है, उसके चेहरे के भाव-भंगिमाओं में ही महसूस किया जा सकता है. सच्चे प्यार का एहसास भी किसी गूंगे के इसी गुड़ के मिठास की तरह मन में घुलता रहता है, जिसे न तो शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है और न ही उपहारों का रूप दिया जा सकता है.

क्या आपने कभी शीतल मंद बयार के झोंके को देखा है? फूलों में व्याप्त खुशबू को भी किसी ने नहीं देखा है. आम्र मंजरियों की खुशबू मन को सराबोर कर देती है. कुदरत की ये सभी नेमतें सिर्फ महसूस की जा सकती हैं. फिर प्यार के बारे में क्या कहा जा सकता है? क्या प्यार का कोई रंग-रूप तथा आकार होता है? भ्रमर तथा मकरंद से भरे फूलों के मध्य कशिश को क्या नाम देंगे आप? आग की लौ की तरफ अनायास खींचनेवाले पतंगों में समर्पण के भाव को क्या कहेंगे आप? अपनी मां को देखकर एक शिशु के नैसर्गिक मुस्कान के भाव में छुपे मातृत्व तथा ममता के भाव को किन शब्दों में अभिव्यक्त किया जा सकता है?

कहते हैं प्यार त्याग होता है. प्यार बलिदान होता है. प्यार समर्पण होता है. तो एक बड़ा प्रश्न यह उठता है कि मानव के दिल में उठनेवाले इन अंतर्निहित भावों को हम सामनेवाले की आंखों में तैर रहे भावों में क्यों नहीं पढ़ पाते हैं? कहा जाता है कि जो एहसास लबों पर आते-आते रुक जाये, वही एहसास सच्चा और वही प्यार पवित्र होता है. प्यार को अभिव्यक्त करने के लिए जब किसी शब्द तथा उपहार के सहारे की जरूरत पड़ने लगे, तो निश्चित तौर पर यह मानिये कि आज तक हमने प्यार में छुपे तिलिस्म को समझने में बड़ी भूल की है.

जिस प्यार को उपहार तथा नाम देने की आवश्यकता होने लगे, उसे हम कुछ और तो कह सकते हैं, लेकिन प्यार बिल्कुल नहीं कह सकते हैं. सोने-चांदी के तराजू पर तौले गये दिलों के वे अनमोल भाव प्यार कम व्यापार अधिक होते हैं. प्यार का जो एहसास आंखों के कोर में टिक जाता है और बाहर निकलने में वह शब्दों की विवशता का शिकार हो जाता है, तो समझिये कि वही सच्चा प्यार है.

जिस वैश्वीकृत दुनिया के रंगीन आधुनिक माहौल में आज हम जी रहे हैं, उसमें यह स्वीकार करने में हमें कोई गुरेज नहीं होना चाहिए कि हम पश्चिमी सभ्यता, मॉडर्न लाइफ स्टाइल तथा हाइब्रिड संस्कृति का आंख मूंदकर अनुसरण कर रहे हैं, और इसके फलस्वरूप हमारे दर्शन, दस्तूर तथा सोच के ढंग में युगांतकारी तब्दीलियां आयी हैं. सूचना क्रांति के इस संक्रमण काल में प्यार-मुहब्बत की अभिव्यक्ति में भी अजीबो-गरीब परिवर्तन हुए हैं. सुर्ख लाल गुलाब के फूलों, चॉकलेटों तथा महंगे उपहारों के आदान-प्रदान के चलन में प्यार की अभिव्यक्ति की आत्मा का दम घुटता जा रहा है. भावों की स्वाभाविकता की खूबसूरती खत्म-सी होती जा रही है तथा इसी के साथ आगाज हो रहा है तथाकथित प्यार को खरीदने के मीना बाजार का.

इस सर्वविदित दुनियावी सत्य से कदाचित इनकार नहीं किया जा सकता है कि विपरीत लिंगियों के प्रति आधुनिक प्यार का भाव दैहिक आकर्षण होता है, जिसमें मन की सात्विकता तथा व्यवहार की लोकधार्मिकता का नितांत अभाव होता है. आज आवश्यकता इस बात की है कि उस तन के आकर्षण में तथा प्यार की अभिव्यक्ति में मन के भटकाव को रोका जाये और अश्लील हरकतों में तथाकथित सच्चे प्यार को प्रदर्शित करने की बजाय प्यार के उस उत्कृष्ट संस्करण की तलाश की जाये, जहां तन से तन के मिलन की बजाय मन से मन के मिलन के जादू से पूरी कायनात सराबोर हो जाये.

आपके पत्र

लिंगानुपात भी बदलेगा

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने एक रिपोर्ट जारी किया जिसमें यह दिखाया गया कि 2015 से 2018 के बीच 60% बच्चे जिन्हें गोद लिया गया है, वे लड़कियां हैं. आंकड़े बताते हैं कि कुल 11,649 बच्चे को गोद लिया गया, जिनमें से 6,962 लड़कियां और 4,687 लड़के है. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने इस डाटा को लोकसभा में 8 फरवरी को जारी किया था. भारत उन देशों में आता है जहां लिंग अनुपात में काफी असमानता है. 1000 लड़कों पर मात्र 943 लड़कियां हैं. भारत में लिंगानुपात कम हो सकता है, मगर गोद लेने की बात पर लड़कियां पहली पसंद होती है. अक्सर खबर आती है कि नवजात बच्चियों को कूड़ेदान में फेंक दिया गया है. कन्या भ्रूण हत्या भी प्रचलित है. अगर यह मानसिकता बदल जाये, तो देश की लिंग अनुपात भी बदलेगा.

अभिषेक मोहन, रांची

दिल्ली में भीषण अग्नि कांड

अभी सहारनपुर और कुशीनगर में जहरीली शराब पीने से 116 लोगों के मरने का गम देश अभी भूल भी नहीं पाया था कि दिल्ली के करोलबाग के एक चार मंजिला होटल में शॉर्ट सर्किट से लगी भयंकर आग में 17 लोगों की मौत हो गयी. आग इतनी भयावह थी कि फायर बिग्रेड की 25 गाड़ियों को आग पर काबू पाने में चार घंटे लग गये. अग्निशमन उपकरण भी थे, लेकिन उनको चलाने का प्रशिक्षण किसी कर्मचारी को नहीं था. आग में झुलसते लोग होटल की खिड़कियों से मदद की गुहार लगाते रहे, लेकिन नीचे खड़ी लगभग 200 लोगों की भीड़ तमाशा देखती रही और वीडिओ बनाती रही. सबसे खेद की बात है कि देश की राजधानी दिल्ली में आग से बचाव के लिए भी जो चुस्तीफुर्ती, बचाव के उपकरण और प्रशिक्षण होना चाहिए, वे कहीं नहीं दिखते. दुर्घटना के मृतकों और घायलों को मुआवजा बांट देना, समस्या का समाधान नहीं है. उस दुखद घटना के कारणों को निस्तारित करना चाहिए, ताकि भविष्य में उसकी पुनरावृत्ति न हो.

निर्मल कुमार शर्मा ,गाजियाबाद

नाराजगी और खुशी !

यूपी में किसानों के गन्ने की अदायगी का न होना, केंद्रीय विद्यालयों के कर्मचारियों और शिक्षकों के वेतन आयोग के एरियर की अदायगी न होना, डीडीए की सड़कों और पार्कों आदि की स्थिति का बेहद खराब होना, एमसीडी के कर्मचारियों के वेतन आदि का समय पर न मिलना, विभागों में लाखों रिक्त पदों का न भरना और अपराध का निरंतर बढ़ना आदि अनेक बातें हैं जिससे जनता नाराज है, लेकिन दूसरी ओर देश में स्वच्छता अभियान, गरीब परिवारों को रसोई गैस, सेना के लिए वन रैंक वन पेंशन, सस्ते ऋण, अच्छे राजमार्गों और समुद्री मार्गों का निर्माण, अच्छी विदेश नीति, पड़ोसी देशों से मित्रता की पहल, गरीब सवर्णों को आरक्षण और किसानों को कुछ आर्थिक सहायता आदि अनेक अच्छे कार्यों से जनता कुछ खुश भी है. अब चुनाव में जनता किसको प्राथमिकता देगी, यह देखना रह गया है.

वेद मामूरपुर, नरेला

कुछ अलग

नेताओं का वैलेंटाइन डे

सुरेश कांत
वरिष्ठ व्यंग्यकार
drsureshkant@gmail.com

मुझे संत बचपन से ही बहुत पसंद रहे हैं. मैं खुद बड़ा होकर संत बनना चाहता था. बड़ा होकर इसलिए कि ज्यादातर लोग बड़े होकर ही कुछ बनते देखे गये हैं. बच्चों से भी यही पूछा जाता है कि बड़े होकर तुम क्या बनोगे? संतों की उलझी-मैली दाढ़ी और जटाएं मुझे बहुत लुभाती थीं. उन्हें देख मुझे लगता था कि उन्हें जिंदगी में कुछ नहीं करना पड़ता, यहां तक कि नहाना-धोना भी नहीं. दूसरा कारण था मेरा संता नामक चरित्र से लगाव, जो सबको हंसाता रहता है. संता को भी मैं कोई परोपकारी संत ही समझता था और मंदिरों में आरती या प्रवचनों के बाद जो यह जयकारा लगाया जाता है कि 'बोल भई सब संतन की जय', उसे मैं दुनियाभर के सभी संताओं की ही जय मानकर जोर-शोर से जयकारे में साथ देता था. आज भी कभी-कभी मुझे मलाल होता है कि मेरे माता-पिता ने मुझे बड़ा होकर संत नहीं बनने दिया, वरना आज मैं भी कहीं किरपा बांटकर मुफ्त की रोटी तोड़ रहा होता. बस, यही सोचकर सब्र कर लेता हूं कि कहीं जेल की रोटी न तोड़नी पड़ जाती.

आगे चलकर उन कहानियों की वजह से भी संत-महात्मा मुझे पसंद आते रहे, जिनके अनुसार बड़े-बड़े राजा-महाराजा अपनी बेटियों की शादी संत-महात्माओं से करने के लिए लालायित रहते थे. पता नहीं, इससे उनका कौन-सा शौक पूरा होता था या राजकुमारी को वे किस अपराध की सजा देना चाहते थे. पर मैं इसलिए भी संत-महात्मा बनना चाहता था कि पता नहीं, कब अपना भी भाग्य खुल जाये. सुना ही होगा आपने कि ऐसे ही किसी राजा ने अपनी बेटी की शादी किसी संत-महात्मा से करने की घोषणा की, तो एक चोर भी संतों का भेस बनाकर उम्मीदवारों की लाइन में लग गया. राजा सभी संतों से अपनी बेटी से शादी करने का निवेदन करता गया और सभी उसका निवेदन ठुकराते गये. आखिर में जब चोर के पास आकर राजा ने उससे प्रार्थना की, तो उसे पता नहीं क्या हुआ, वह सोचने लगा कि जब संत का भेस बनाने भर का इतना प्रभाव है कि खुद राजा मेरे सामने झुका हुआ प्रार्थना कर रहा है, तो असल में संत बनने पर तो पता नहीं क्या होगा! और यह सोचकर उसने भी मना कर दिया और सचमुच का संत बनने चल दिया. सच है, दिमाग खराब होते देर नहीं लगती.

कभी-कभी संत विदेशों में भी हो जाते हैं, फर्क सिर्फ यह है कि वहां उन्हें सेंट कहा जाता है. सेंट वैलेंटाइन का तो देश में इतना प्रभाव है कि नेता तक उनसे प्रभावित हैं. वर्तमान लोकसभा के आखिरी सत्र में यह प्रभाव खूब देखा जा रहा है. चुनाव निकट होने के कारण सदन में कामकाज के दौरान भले ही राजनीतिक तल्खी नजर आती हो, सदन स्थगित होते ही माहौल वैलेंटियाना हो जाता है. सत्ता पक्ष के सांसद विपक्षी बेंच तक, तो विपक्ष के सांसद सत्ता पक्ष की बेंच तक पहुंच जाते हैं. सभी दलों के सदस्य बड़े प्रेम-भाव से बतियाते नजर आते हैं. दल अपनी जगह है, दिल अपनी जगह. सत्ता जाती है, तो दल काम नहीं आयेगा, इसीलिए वे 'दल मिले न मिले, हाथ मिलाते रहिये' के अंदाज में वैलेंटाइन डे मनाते दिख रहे हैं.

देश दुनिया से

बर्लिन में बीएनडी का नया मुख्यालय खुला

जर्मनी की राजधानी बर्लिन में जर्मनी की विदेशी खुफिया एजेंसी बीएनडी ने अपना नया मुख्यालय खोला है. दशकों तक बीएनडी का मुख्यालय म्यूनिख के पास स्थित कस्बे पुलाख में था. नया मुख्यालय शहर के केंद्र में बिल्कुल उसी जगह बनाया गया है, जहां पहले बर्लिन की दीवार हुआ करती थी. इसे जर्मनी के लिए एक बड़ा सांकेतिक कदम माना जा रहा है कि अब वह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सुरक्षा के मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए तैयार है. यह दुनिया के सबसे बड़े खुफिया सेवा परिसरों में से एक है. मुख्यालय परिसर के बीच में एक बड़ा सा पत्थर रखा गया है, जिसको द थिंग (दास डिंग) का नाम दिया गया है. इसको डुसलडॉर्फ के कलाकार स्टेफान सूस ने बनाया है, जिनकी बनायी विशाल मूर्तियां जर्मनी के कई सार्वजनिक जगहों की शोभा बढ़ाती हैं. योजना है कि आम लोग भी मुख्यालय के अंदर जा सकें. पिछले दिनों जर्मन चांसलर एंजेला मैर्केल ने इसका उद्घाटन किया. तकरीबन 12 साल से इस मुख्यालय को बनाया जा रहा था, जो अब जाकर पूरा हुआ है. दस हेक्टेयर में बने और 110 करोड़ यूरो की लागत वाले इस मुख्यालय के दरवाजे चूना पत्थर और एल्यूमीनियम से बने हैं.

कार्टून कोना

साभार : कार्टूनमूवमेंटडॉटकॉम

पोस्ट करें : प्रभात खबर, 15 पी, इंडस्ट्रियल एरिया, कोकर, रांची 834001, **फैक्स करें** : 0651-2544006,
मेल करें : eletter@prabhatkhabar.in पर ई-मेल संक्षिप्त व हिंदी में हो. लिपि रोमन भी हो सकती है